NAME - SURAJ KUMAR

COLLEGE NAME - SANKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHER EDUCATION

AT - KRINDIH, KUMHAU STATION ROAD, SHIOSAGAR SASARAM ROHTAS BIHAR 821115.

SUB - UNIT-2 ~~हिन्दी का~~ शिक्षण शास्त्र (F8) D.El.Ed 1st year (2019-2021)

Scanned by TapScanner

D.El.Ed 1st year (2019-2021)

हिन्दी का शिक्षणशास्त्र - 1 F8

UNIT-2: प्राथमिक स्तर की ~~पाठ्यचर्या~~ पाठ्यचर्या – पाठ्यक्रम की संरचना

प्राथमिक स्तर की ~~पाठ्यचर्या~~ पाठ्यचर्या :—

पाठ्यक्रम शिक्षाशास्त्र का बड़ा रोचक विषय है। कुछ समय पूर्व तक इस शब्द का बड़ा संकुचित अर्थ लगाया जाता था, किन्तु अब हम पाठ्यक्रम में विद्यालय के समस्त अनुभवों को सम्मिलित कर लेते हैं। छात्र कक्षा में या कक्षा से बाहर विद्यालय की सीमा के ~~के अर्थ~~ किसी स्थल पर जो कुछ अनुभव करता है। वह सब पाठ्यक्रम है, और पाठ्यक्रम में ही पाठ्यचर्या समाहित है।

पाठ्यक्रम का एक आवश्यक पक्ष विभिन्न विषयों का अध्ययन - अध्यापन भी है। प्राथमिक स्तर की कक्षाओं में समझते हुए पढ़ना - लिखना सीख लेने के बाद उच्च प्राथमिक स्तर तक पहुँचकर अब विद्यार्थी पढ़ते समय किसी रचना से भावानात्मक रूप से जुड़ जाते हैं। इस स्तर यानी (उच्च प्राथमिक स्तर पर आते - आते शिक्षार्थियों के पढ़ने - लिखने में अंतर होता है। हमारे पढ़ाने का तरीका इस बात पर निर्भर करता है कि हमारे पढ़ाने का उद्देश्य क्या है?

पाठ्यक्रम सम्बन्धी अपेक्षाएँ सीखने - सीखाने की प्रक्रिया तथा सीखने की संप्राप्तियों को दर्शाने वाले बिन्दु दिये गये है, उनमें परस्पर जुड़ाव है और एक से अधिक भाषायी क्षमताओं की झलक मिलती है। इस तरह भाषा की कक्षा में एक साथ सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना जुड़ा है। पाठ्यचर्या संबंधी अपेक्षाओं को पूरा करने में सीखने में उपयुक्त प्रक्रियाओं की बड़ी भूमिका होती है।

Note:-

पाठ्यक्रम की संरचना

यहाँ पर एक बात समझने की पाठ्यक्रम और पाठ्यवस्तु में अन्तर क्या है। पाठ्यक्रम के अन्दर पाठ्यवस्तु को सम्मिलित किया जाता है, तथा पाठ्यवस्तु से तात्पर्य होता है, शिक्षण विषय की रूपरेखा जो किसी के लिए निर्धारित की गई है।

यानि पाठ्यक्रम का स्वरूप अधिक व्यापक होता है, जबकि पाठ्यवस्तु का स्वरूप सुनिश्चित होता है, जिसके अन्तर्गत शिक्षण विषयों के प्रकरणों को ही सम्मिलित किया जाता है।

पाठ्यक्रम की संरचना में तीन स्तर

① बीज

- इनमें बीज पाठ्यक्रम शिक्षार्थी के समन्वित विकास के प्रति भामाअसन् की प्रतिबद्धता का द्योतक है।
- इसमें शिक्षार्थी की ~~समग्र~~ समग्र आत्मविकास, भारतीय वस्तुस्थिति का अंगीकार, और व्यवसाय के लिए आवश्यक संवेदना तथा दक्षता शामिल है।

② सामान्य

- सामान्य के अन्तर्गत आनेवाला पाठ्यक्रम प्रथम वर्ष के सभी छात्रों के लिए समान है, और भामाअसन् की अन्तरानुशासनिकता की बुनियाद है।
- सामान्य के अन्तर्गत यह सुनिश्चित हो जाता है कि शिक्षार्थी को ज्ञान के सभी इलाकों, व्यवहार के क्षेत्रों और भामाअसन् की अध्ययनशाखाओं की बुनियादी जानकारी हो।

③ ~~विशेषज्ञ~~ विशेषज्ञता

एक बार सामान्य के स्तर से गुजर चुकने के बाद शिक्षार्थी अपना द्वितीय वर्ष विशेषज्ञता के अर्जन में व्यतीत करेगा जो उसको किसी विशिष्ट व्यवहार अथवा ज्ञानक्षेत्र में गहराई तक ले जाएगा।

Scanned by TapScanner

- एक पाठ्यक्रम के तौर पर अपनी संरचना में उन पारस्परिक आकदनी कार्यक्रम में एक महत्वपूर्ण स्थान है, जो ज्ञान और कौशल के हस्तान्तरण पर ही प्राथमिक रूप से अपना एकाग्र करते हैं

- ~~पाठ्यक्रम पाठ्यचर्या का सूक्ष्म रूप या भाग होता है।~~

पाठ्यचर्या संबंधी अपेक्षाएँ

- किसी अन्य विषय जैसे विज्ञान, गणित, समाजिक विज्ञान, आदि में प्रयुक्त भाषा की समुचित समझ बनाना एवं उनका प्रयोग करना।
- दैनिक जीवन में तार्किक एवं वैज्ञानिक समझ की ओर बढ़ना।
- पढ़ी - लिखी, सुनी - देखी, समझी गई भाषा का सृजनशील प्रयोग।
- हिन्दी भाषा साहित्य को समझते हुये समाजिक परिवेश के प्रति जागरूक होना।
- हिन्दी भाषा में अभिव्यक्ति में व्यक्त बातों की तार्किक समझ बनाना।
- साहित्य की विभिन्न विधाओ (जैसे - कविता, कहानी, निबन्ध, एकांकी आदि) की समझ बनाना और उनका आनन्द उठाना।
- बच्चो को दृश्य - श्रव्य माध्यमों का प्रयोग करना।
- अपने व दुसरे के अनुभवो को कहना, सुनना, पढ़ना, लिखना यानि इससे अपनी अभिव्यक्ति की समझ बनेगी।
- विभिन्न समाजिक - सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति अपने विचारो को अभिव्यक्त करना।
- समाचार पत्र / पत्रिकाओं में दी गई खबरों को जानना एवं समझना।
- किसी भी किताब को पढ़ने और समझने की जिज्ञासा को व्यक्त करना।

Scanned by TapScanner